अंक 5 माहः दिसंबर 2024

विश्वत

मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका

"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।"

(बृहदारण्यक उपनिषद 1.3.28)

यह श्लोक भारतीय ज्ञान परंपरा के उस दृष्टिकोण को व्यक्त करता है, जो अज्ञान से ज्ञान, अंधकार से प्रकाश, और मृत्यु से अमरता की ओर यात्रा का आह्वान करता है। महा कुंभ इस आध्यात्मिक यात्रा और आत्मिक शुद्धि का प्रतीक है, जहां श्रद्धालु संगम पर स्नान कर अपने भीतर के अज्ञान और दोषों को त्यागने का संकल्प लेते हैं। यह आयोजन भारतीय संस्कृति में "सर्वे भवंतु सुखिनः" की भावना को भी दर्शाता है, जो समस्त मानवता के कल्याण और ज्ञान के प्रसार की आकांक्षा रखता है।

संपादकीय

भारतीय ज्ञान परंपरा और महा कुंभ: एक सांस्कृतिक धरोहर

भारत की भूमि सदा से ज्ञान और विचारों की जननी रही है। ऋग्वेद से लेकर उपनिषद, महाकाव्य से लेकर स्मृतियाँ, भारतीय ज्ञान परंपरा ने विश्व को दर्शन, विज्ञान, गणित, कला और चिकित्सा जैसे अनेकानेक क्षेत्रों में समृद्ध किया है। यह परंपरा न केवल अतीत में बल्कि आज भी प्रासंगिक है। इसकी जड़ें हमारी संस्कृति, जीवनशैली और आधुनिक सोच में गहराई तक पैठी हुई हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा की शुरुआत वेदों से हुई। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों ने भारतीय समाज को जीवन के हर पहलू में मार्गदर्शन दिया है। यह परंपरा न केवल धार्मिक या आध्यात्मिक विषयों तक सीमित है, बल्कि गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद और योग जैसे क्षेत्रों में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने इस परंपरा को वैश्विक स्तर पर प्रसारित किया।

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल किताबों तक सीमित नहीं रही; यह जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त रही है। भारतीय संस्कृति में प्रतिदिन की प्रथाओं में भी ज्ञान की गहरी समझ का समावेश है। चाहे वह यज्ञ की प्रक्रिया हो, आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति हो, या योग का विज्ञान, सभी में गहन बौद्धिकता का समावेश है।

महा कुंभ भारतीय ज्ञान परंपरा का जीवंत उदाहरण है। यह केवल एक धार्मिक मेला नहीं है, बल्कि एक ऐसा मंच है जहां विभिन्न दार्शनिक विचार, आध्यात्मिक अनुभव और सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है। महा कुंभ का आयोजन हर 12 वर्षों में होता है, और यह समाज में आध्यात्मिक जागरूकता के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ साधु-संत, विद्वान और श्रद्धालु मिलकर ज्ञान और अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं।

आज के युग में जब पूरा विश्व विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है, भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। योग और आयुर्वेद जैसे प्राचीन विज्ञान वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण बन गए हैं। भारतीय दर्शन, जिसमें शांति और सह-अस्तित्व का संदेश निहित है, आज के समय में मानवता के लिए एक मार्गदर्शक सिद्ध हो रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत का गौरव नहीं है; यह वर्तमान और भविष्य के लिए भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। महा कुंभ जैसे आयोजनों के माध्यम से यह परंपरा न केवल संरक्षित हो रही है, बल्कि पुनर्जीवित भी हो रही है। हमें इस अमूल्य धरोहर को समझने, आत्मसात करने और अगली पीढ़ी को सौंपने की आवश्यकता है।

वृतांत

- ३ दिसंबर को, महर्षि कर्वे स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज के बीए के छात्रों ने खंडवा स्थित दैनिक भास्कर प्रिंटिंग प्रेस का दौरा किया। इस दौरान उन्हें प्रिंट मीडिया संचालन और पत्रकारिता में करियर के बारे में जानकारी दी गई।

- 3 दिसंबर को एनएसएस इकाई ने एड्स जागरूकता अभियान के तहत रक्तदान शिविर का आयोजन किया। छात्रों और स्टाफ की सक्रिय भागीदारी ने स्वास्थ्य और सामुदायिक सेवा के महत्व को रेखांकित किया।

- 4 दिसंबर को, पैरामेडिकल साइंस और फार्मेसी स्कूल ने "मेरा स्वास्थ्य, मेरा अधिकार" थीम के तहत पोस्टर, नाटकों और संवादों के माध्यम से एड्स जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। विश्वविद्यालय के नेतृत्व ने सामाजिक योगदान के महत्व पर जोर दिया।

- बीएमएलटी की छात्रा नेहा यादव ने यूथ फेस्टिवल 2024 में क्ले मॉडलिंग में तीसरा स्थान प्राप्त किया और नेशनल यूथ फेस्टिवल के लिए क्वालीफाई किया। यह उपलब्धि विश्वविद्यालय के लिए गर्व का विषय बनी।

- बीसीए की छात्रा और एनसीसी कैडेट अक्ष सिद्धिकी ने 67वीं एनएससीसी शूटिंग चैंपियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर नेशनल शूटिंग कैंप के लिए क्वालीफाई किया। उनकी मेहनत की व्यापक सराहना की गई।

- स्वामी विवेकानंद करियर गाइडेंस सेंटर के अंतर्गत टिमरनी गवर्नमेंट कॉलेज में आयोजित कार्यशाला में शोध और द्वि-डिग्री अवसरों पर प्रकाश डाला गया। डॉ. उमेश शर्मा ने भविष्य की सफलता के लिए कौशल विकास पर जोर दिया।

- 26 दिसंबर को लोकपाल डॉ. हरिसिंह ठाकुर ने विश्वविद्यालय का दौरा किया। उन्होंने छात्रों को लक्ष्य निर्धारण और नवाचार पर प्रेरणादायक बातें साझा कीं। चर्चा में कृषि प्रगति और छात्रों के सवाल शामिल थे।

अंक 5, क्रमांक -2,
माहः दिसंबर 2024

विश्वत

भारतीय ज्ञान गंगा और संत परंपरा

भारतीय ज्ञान गंगा, जो वेदों से शुरू होकर शंकराचार्य, रामानुजाचार्य और विवेकानंद जैसे महान विचारकों के माध्यम से विकसित हुई, भारतीय समाज के जीवन और संस्कृति का मूल आधार रही है। यह गंगा हमें आत्मज्ञान, धर्म, और जीवन के उच्चतम आदर्शों की ओर प्रेरित करती है। संत परंपरा, जो इस ज्ञान गंगा के साथ जुड़ी हुई है, समाज को नैतिकता, धर्म, और संस्कारों का पाठ पढ़ाती है। संतों का समाज में एक विशेष स्थान है, और उनका उद्देश्य न केवल आत्मिक उन्नति है, बल्कि समाज को सही दिशा में मार्गदर्शन देना भी है।

संत का अर्थ 'सतत' और 'अंत' से है, जो निरंतरता और पूर्णता को दर्शाता है। संत अपने जीवन को साधना, ध्यान, और सेवा में समर्पित करते हैं, और उनका लक्ष्य समाज के हर वर्ग को उच्चतम स्तर पर ले जाना है। उनका उद्देश्य समाज की आंतरिक शुद्धता और आध्यात्मिक जागरूकता को बढ़ावा देना है। संतों की शिक्षाएँ समाज में सुधार और परिवर्तन लाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनके बिना समाज में मार्गदर्शन की कमी हो सकती है, और समाज की नैतिक स्थिति कमजोर हो सकती है।

महाकुंभ जैसे धार्मिक आयोजन संत समाज के विचारों और सन्निधि का महत्वपूर्ण माध्यम होते हैं। ये आयोजन न केवल आध्यात्मिक जागरूकता का प्रसार करते हैं, बल्कि समाज में एकता और शांति की भावना भी उत्पन्न करते हैं। भारतीय ज्ञान गंगा के प्रवाह से समाज को अंधविश्वास, जातिवाद, और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है।

संतों ने अपने जीवन से यह सिखाया कि धर्म, न्याय, और मानवता का मार्ग ही समाज को सही दिशा में ले जा सकता है। आज भी संतों के विचार शासन की नीतियों में प्रासंगिक हैं। उनका योगदान न केवल धार्मिक उन्नति में, बल्कि समाज में व्याप्त असमानता और सामाजिक बुराइयों को दूर करने में भी महत्वपूर्ण रहा है। उनका यह संदेश कि समाज में समानता, प्रेम, और सेवा का प्रसार होना चाहिए, आज भी शासन और समाज के लिए मार्गदर्शक है।

भारतीय ज्ञान गंगा की धारा आज भी हमें अपने जीवन में धार्मिक, नैतिक, और सामाजिक जिम्मेदारियों को समझने और पालन करने की प्रेरणा देती है। यह गंगा हमें यह सिखाती है कि सूक्ष्म रूप में भी विशाल ज्ञान समाहित हो सकता है, और हम सभी को उस ज्ञान की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। संतों के विचार और उनकी शिक्षा भारतीय समाज के जीवन का एक अभिन्न हिस्सा हैं, और हमें उन्हें संरक्षित करने और प्रसारित करने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए, ताकि उनकी शिक्षाएँ हमेशा हमारे जीवन में प्रासंगिक रहें।

संपादकीय मंडल

संरक्षक : प्रो. डॉ. अरुण रमेश जोशी,
कुलगुरु, सीवीआरयू खंडवा,
प्रधान संपादक : श्री रवि चतुर्वेदी, कुलसचिव, सीवीआरयू, खंडवा,
कार्यकारी संपादक : प्रो. नेहा शुक्ला, मुख्य प्रकाशन अधिकारी
साक्षी चौहान,
सदस्य : 1. डॉ. सीमा शर्मा, डायरेक्टर रिसर्च एंड इनोवेशन
2. डॉ. गणेश मलगाया, डायरेक्टर केंद्रीय प्रयोगशाला समन्वयक
3. प्रो. योगेश महाजन, तकनीकी अधिकारी, कुलगुरु सचिवालय
संकल्पना : श्री प्रमोद पटेल, ग्राफिक डिजाइनर
प्रकाशन विभाग
पवन चौरसिया, ग्राफिक डिजाइनर
संचार एवं प्रसार : श्री मनदीप सिंह पंवार, अध्ययनशाला समन्वयक
आर्यभट्ट स्कूल ऑफ डिजिटल लर्निंग
श्री हमज़ा मलिक,
वनमाली केन्द्रीय ग्रंथालय

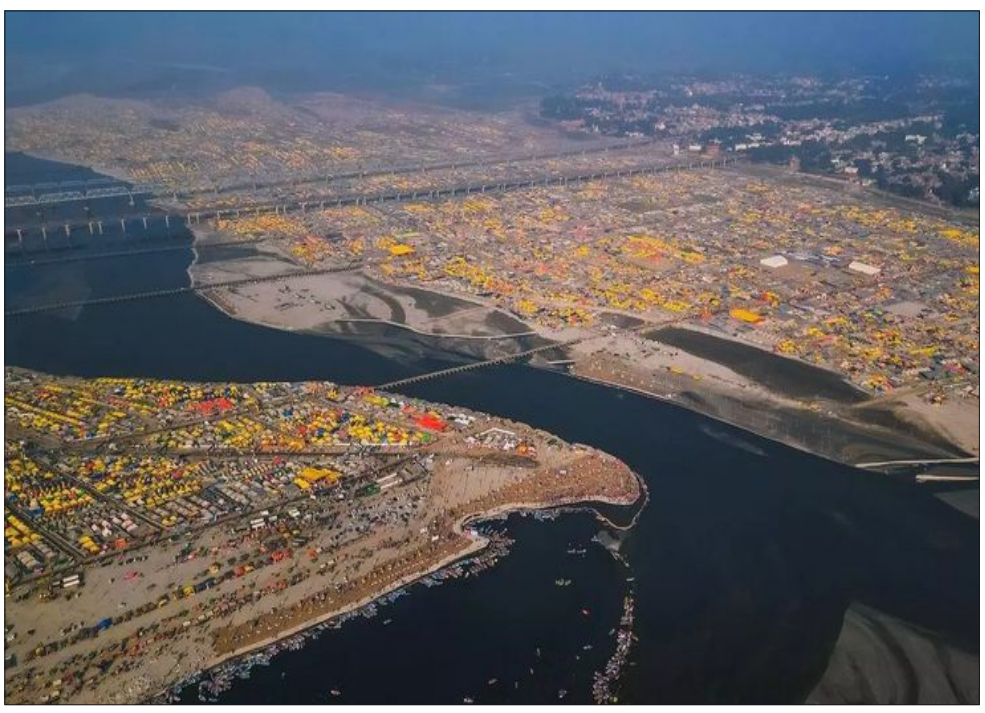

ज्ञान कुंभ: नई धारा की ओर

भारत, एक ऐसी भूमि है जहाँ सदियों से ज्ञान की अविरल धारा बहती रही है। वेद, उपनिषद, पुराण, और शास्त्रों के माध्यम से हमारी संस्कृति ने न केवल भारत को, बल्कि संपूर्ण मानवता को अनमोल ज्ञान दिया है। इस परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री, उच्च शिक्षा मंत्री और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने एक नई पहल की शुरुआत की है, जिसे 'ज्ञान कुंभ' के नाम से जाना जाता है। ज्ञान कुंभ के आयोजन के पीछे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, उच्च शिक्षा मंत्री और यूजीसी की प्रमुख संकल्पना है। इन नेताओं ने यह सुनिश्चित किया है कि इस आयोजन के माध्यम से भारतीय ज्ञान और संस्कृति को बढ़ावा मिले, साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और शोध की दिशा में भी प्रगति हो।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह आयोजन हमारे प्राचीन ज्ञान की पुनर्स्थापना करने के साथ-साथ नई पीढ़ी को भविष्य के लिए तैयार करेगा। ज्ञान कुंभ का मुख्य उद्देश्य शिक्षा, अध्यात्म और संस्कृति का अद्वितीय समागम है। इस आयोजन में शिक्षा के विविध पहलुओं पर चर्चा की जाती है, जिससे विद्यार्थियों को अपने भविष्य की दिशा स्पष्ट हो। इसके साथ ही, भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के महत्व को भी प्रमुखता से बताया जाता है, ताकि लोग अपनी जड़ों से जुड़ें और आत्म-निर्भर बन सकें।

ज्ञान कुंभ केवल एक शैक्षिक सम्मेलन नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता और संस्कृति के पुनर्निर्माण की दिशा में एक कदम है। यह आयोजन भारतीय समाज को एक नई दिशा देने के लिए एक प्रेरणा बनकर उभर रहा है, जो शिक्षा, संस्कार और अध्यात्म के समागम से समृद्ध होगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा और महा कुंभः "अध्यात्म की गंगा"

भारत की संस्कृति और सभ्यता का इतिहास ज्ञान और आध्यात्मिकता से ओतप्रोत है। भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान केवल बौद्धिक उपलब्धि नहीं, बल्कि आत्मा की पहचान और जीवन के परम उद्देश्य की समझ है। महा कुंभ, जिसे 'अध्यात्म की गंगा' कहा जाता है, इस ज्ञान परंपरा का एक अद्वितीय प्रतीक है, जो लाखों लोगों को एकत्र करता है और उन्हें आत्म-निर्माण और चेतना के नए आयामों की ओर प्रेरित करता है।

महा कुंभ, विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक समागम है, जिसमें लाखों साधक और श्रद्धालु अपनी आस्थाओं को साझा करने और अध्यात्मिक उन्नति की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए एकत्र होते हैं। यह समागम केवल भौतिक रूप से नहीं, बल्कि मानसिक और आत्मिक रूप से भी एक गहरी कड़ी है। यहाँ हर व्यक्ति अपनी आंतरिक शांति, साधना, और आत्म-साक्षात्कार की प्रक्रिया में भागीदार बनता है। यह समागम केवल धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि एक अवसर है, जहाँ व्यक्ति अपनी आत्मा के साथ गहरे संवाद में लिप्त होता है और आत्मा के परम स्रोत से जुड़ने का प्रयास करता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान और आत्मा के बीच एक सशक्त संबंध है। वेद, उपनिषद, और भगवद गीता में यह स्पष्ट किया गया है कि आत्मा अजर और अमर होती है, और ज्ञान आत्मा की पहचान है। ज्ञान को न केवल बौद्धिक समझ से जोड़ा गया है, बल्कि यह आत्मिक अनुभव का हिस्सा माना गया है। जब व्यक्ति आत्म-ज्ञान को प्राप्त करता है, तो वह अपने असली रूप को पहचानता है और जीवन के वास्तविक उद्देश्य की ओर अग्रसर होता है। महा कुंभ में यह अनुभव शिखर पर पहुँचता है, जब साधक ध्यान और साधना के माध्यम से आत्मा के अद्वितीय रूप को पहचानता है और परम सत्य के साक्षात्कार की ओर बढ़ता है।

भारतीय संत परंपरा ने सदियों से मानवता को मार्गदर्शन दिया है। संतों ने न केवल धार्मिक शिक्षाएं दीं, बल्कि उन्होंने जीवन के वास्तविक उद्देश्य की ओर जागरूक किया। वे जीवन के हर पहलू को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा देते थे। उनके उपदेशों में ज्ञान, प्रेम, और समर्पण की गहरी भावना होती थी। आज के आधुनिक समाज में जहाँ भौतिकवाद और व्यक्तिगत लाभ की प्रवृत्तियाँ हावी हैं, भारतीय संत परंपरा का यह संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। महा कुंभ, इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण उत्सव है, जहाँ संतों और साधकों के उपदेशों से लोग अपने जीवन को एक नई दिशा दे सकते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा और महा कुंभ का यह अध्यात्मिक संगम न केवल धार्मिक उत्सव है, बल्कि यह हमारे आत्मिक और मानसिक विकास का भी अवसर है। "अध्यात्म की गंगा" से प्रेरित होकर हम अपनी आत्मा के साथ एक गहरे और सार्थक संबंध की स्थापना कर सकते हैं, जो हमें जीवन के वास्तविक अर्थ से परिचित कराता है। महा कुंभ और भारतीय संत परंपरा के इस अद्वितीय मेल से हमें अपने जीवन में आध्यात्मिकता की गहरी समझ और शांति प्राप्त होती है।

"भारतीय ज्ञान परंपरा और ज्ञान कुंभ": भविष्य की योजना और संकल्प

भारत की ज्ञान परंपरा सदियों से विश्वभर में सम्मानित रही है, और इसे संजोते हुए आगामी महाकुंभ की योजना तैयार की जा रही है। इस आयोजन का उद्देश्य न केवल भारतीय संस्कृति और ज्ञान को पुनः जीवित करना है, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करना भी है।

ज्ञान कुंभ महाकुंभ एक ऐतिहासिक पहल होगी, जिसमें भारतीय संस्कृति, साहित्य, विज्ञान, और दर्शन के समृद्ध पहलुओं को प्रदर्शित किया जाएगा। इस आयोजन में भारतीय विद्वानों, शोधकर्ताओं, और विचारकों के साथ-साथ विदेशी विशेषज्ञों को भी आमंत्रित किया जाएगा। यह कुंभ भारतीय ज्ञान के उत्थान और प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बनेगा। इसके माध्यम से हम ज्ञान के सभी क्षेत्रों में नवीनतम शोध, विचार-विमर्श और विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करेंगे।

इस ज्ञान कुंभ का मुख्य उद्देश्य समाज और छात्रों में भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को समझाना और उसे पुनः प्रतिष्ठित करना है। यह छात्रों को अपने देश की सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ने का अवसर देगा, जिससे वे अपने राष्ट्र के ज्ञान वर्धन में सक्रिय भूमिका निभा सकेंगे। समाज के विभिन्न वर्गों को भारतीय शिक्षा और ज्ञान के महत्व के प्रति जागरूक किया जाएगा।

"ग्लोबल भारतीय ज्ञान परंपरा" का विकास भारत का प्राचीन ज्ञान केवल हमारे देश तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भी अपनी अहमियत रखता है। "ग्लोबल भारतीय ज्ञान परंपरा" के विकास की दिशा में इस कुंभ के आयोजन से भारतीय विचारों और दर्शन की मान्यता को दुनिया भर में फैलाया जाएगा। विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक और शैक्षिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलेगा, जिससे भारतीय ज्ञान का वैश्विक प्रसार होगा।

अंक 5, क्रमांक -4,
माहः दिसंबर 2024

विश्वत

दिव्य कुंभः भारतीय ज्ञान परंपरा की अद्भुत झलक

कुंभ मेला भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक धरोहर का वह अनोखा आयोजन है, जो विश्व के सबसे बड़े धार्मिक सम्मेलनों में गिना जाता है। हर 12 वर्षों में आयोजित होने वाला यह मेला प्राचीन पौराणिक कथाओं, रंगीन अनुष्ठानों और गहन आध्यात्मिकता की जीवंत प्रस्तुति करता है। गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर लाखों श्रद्धालुओं का आगमन इस आयोजन को एक दिव्यता प्रदान करता है। यह मेला न केवल भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रतीक है, बल्कि आस्था, शुद्धिकरण, और भक्ति की यात्रा का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व

नागा साधुओं की तपस्या से लेकर विभिन्न अखाड़ों की सांस्कृतिक धरोहर तक, कुंभ मेला संत परंपरा और भारतीय अध्यात्म का समृद्ध दर्पण है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे जीवन के चार पुरुषार्थों की प्राप्ति की प्रेरणा देने वाला यह मेला श्रद्धालुओं के लिए आत्मा की शुद्धि और ईश्वर की कृपा प्राप्त करने का अनूठा अवसर प्रदान करता है।

वेदों और पुराणों में वर्णित कथा और परंपराएं इस आयोजन की ऐतिहासिक और धार्मिक प्रासंगिकता को बढ़ाती हैं। धार्मिक अनुष्ठानों, यज्ञों, कथा-वाचन और प्रवचनों के माध्यम से यह आयोजन भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर को संरक्षित करता है।

सामाजिक समरसता का प्रतीक

कुंभ मेला सामाजिक एकता और समरसता का प्रतीक है। जाति, वर्ग, और धर्म की सीमाओं को लांघते हुए लाखों लोग एक साथ इस आयोजन में सम्मिलित होते हैं। संत, योगी, महात्मा, और आमजन, सभी इस मेले में समान रूप से सहभागी बनते हैं।

यह आयोजन "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना को साकार करता है और राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करता है।

आर्थिक और व्यावसायिक महत्व

कुंभ मेला केवल धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन नहीं है, बल्कि इसका व्यवसायिक पक्ष भी अत्यधिक प्रभावशाली है। लाखों श्रद्धालुओं और पर्यटकों की उपस्थिति स्थानीय, क्षेत्रीय, और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को गति देती है।

पर्यटन उद्योग: होटल, गेस्ट हाउस और यात्रा सेवाओं की मांग में वृद्धि होती है।

स्थानीय व्यापार: हस्तशिल्प, धार्मिक वस्त्र, पूजा सामग्री, और स्थानीय उत्पादों को बड़ा बाजार मिलता है।

रोजगार के अवसर: आयोजन से जुड़े कार्यों जैसे सुरक्षा, परिवहन, और भोजन वितरण में हजारों लोगों को रोजगार मिलता है।

ज्योतिषीय और खगोलीय महत्व

कुंभ मेला भारतीय ज्योतिष और खगोल विज्ञान पर आधारित है। यह आयोजन तब होता है जब सूर्य, चंद्रमा और गुरु ग्रह विशेष ज्योतिषीय स्थितियों में आते हैं। इन खगोलीय घटनाओं को अत्यंत शुभ माना जाता है। इस समय पवित्र नदियों में स्नान करने से व्यक्ति के पापों का नाश और आत्मा की शुद्धि होती है।

कुंभ मेला भारतीय संस्कृति, धर्म और समाज का एक ऐसा पर्व है, जो मानवता को एकता, समरसता और आध्यात्मिकता के सूत्र में बांधता है। यह आयोजन भारतीय ज्ञान परंपरा, आर्थिक प्रगति और सामाजिक समरसता का अनोखा संगम है। भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आत्मा को समझने के इच्छुक हर व्यक्ति के लिए कुंभ मेला एक अमूल्य शोध और अनुभव का माध्यम है।

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY Madhya Pradesh, Khandwa | RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY | AISECT UNIVERSITY Jharkhand, Hazaribag | DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY Chhattisgarh, Bilaspur | SCOPE GLOBAL SKILLS UNIVERSITY | DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY Bihar, Vaishali